"ज़रूरी है शिक्षक का रचनात्मक होना" : विश्वनाथ गुंडीगेरे

राघवेंद्र हेर्ले

विश्वनाथ गुंडीगेरे अपने स्कूल में, कक्षा में किए जाने वाले नवाचारों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने अलग-अलग भाषा व संस्कृति से आने वाले बच्चों को कक्षा में सम्मानपूर्ण जगह दी, आत्मविश्वास दिया ताकि वह बेझिझक अपनी घर की भाषा का उपयोग भी करें और कन्नड़ भाषा, जो उनके लिए नई है, को भी सीख सकें। इसके लिए उन्होंने पुस्तकालय का बेहतर इस्तेमाल किया।

विश्वनाथ गुंडीगेरे उच्च प्राथमिक विद्यालय नागरथपेट, सिंधी, बेंगलूरु में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने चार पुस्तकें भी लिखी हैं। इनमें कविता के दो संस्करण, *चौकाबारा* और *एदेया दनिगे किविया गोणा*; लघुकथाओं का एक संग्रह, *मुखवाडागळू मत्तू इतरा कथेगळु;* और *सामान्य ज्ञान* की एक पुस्तक, जिसका शीर्षक सामान्य ज्ञान है, शामिल हैं। उन्होंने दो पुस्तकों, *जनपद अइसिरी* और *सम्प्रीति* का सम्पादन किया है। बेंगलूरु साउथ डिस्ट्रिक्ट 2014 के लिए सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार और 2016 में कर्नाटक राज्य कर्मचारी संघ द्वारा साहित्य रत्न पुरस्कार प्राप्तकर्ता, विश्वनाथ गुंडीगेरे ने कन्नड़ साहित्य परिषद की बेंगलूरु इकाई के मानद सचिव के रूप में भी काम किया है।

कक्षा प्रक्रियाओं में उनके द्वारा किए गए नवाचारों के बारे में राघवेंद्र हेर्ले ने *पाठशाला* के स्तम्भ 'इनसे मिलिए' के लिए उनसे बातचीत की। प्रस्तुत हैं, इस बातचीत के कुछ अंश :

चित्र 1 : विश्वनाथ गुंडीगेरे के साथ बातचीत करते राघवेंद्र हेर्ले

> **"शिक्षक में रचनात्मक विचार प्रक्रिया होना ज़रूरी है जो शिक्षण-अधिगम की एकरसता को तोड़ने के लिए आवश्यक है।"**

राघवेंद्र हेर्ले : एक शिक्षक के रूप में आपने अपनी कक्षा में कौन-सी नवीन पहल की हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : कक्षा को हर दिन जितना सम्भव हो सके उतना जीवन्त और सजीव बनाए रखने का प्रयास करता हूँ। ऐसी गतिविधियों की योजना बनाता हूँ जो विद्यार्थियों के लिए रुचिकर हों। उदाहरण के लिए, पाठ की प्रकृति के अनुसार सुर सम्बन्धी उतार-चढ़ाव लाने के लिए विविध गीतों का उपयोग करना, और विद्यार्थियों से 'पंजरशाले' (पिंजरे में बन्द स्कूल) और 'बिल्लहब्बा' (धनुष का त्योहार) जैसे नाटकों का अभिनय करवाना। इन सबके लिए शिक्षक में रचनात्मक विचार प्रक्रिया होनी चाहिए जो शिक्षण-अधिगम की एकरसता को तोड़ने के लिए आवश्यक है। 'हच्चेवु कन्नडादा दीपा' (हम कन्नड़ का दीप जलाएँगे), 'हुट्टरी हाडु' (फ़सल का गीत) जैसी कविताएँ पढ़ाते समय कविता सुनाने और गाने के अलग-अलग तरीक़ों का उपयोग करता हूँ। फिर बच्चों को विभिन्न तरीक़ों से कविता पाठ करने और गाने के लिए प्रेरित करता हूँ। चाहे गद्य हो या पद्य, अभिनय की तकनीक का उपयोग ज़्यादा करने का प्रयास रहता है क्योंकि यह बच्चों से अधिक जुड़ाव बनाती है। यह एकल अभिनय हो सकता है, या कई बच्चे पाठ का अभिनय कर सकते हैं। पाठ की आवश्यकताओं के अनुसार सामान्य ज्ञान के प्रश्न, बोध के प्रश्न, सन्दर्भगत और विस्तारात्मक प्रश्न या अनुप्रयोग के प्रश्नों का प्रयोग होता है। मुख्य रूप से, हमारा ध्यान इस बात पर होता है कि शिक्षक को कविता या पाठ पढ़ाने में आनन्द आए और बच्चों को पढ़ने में। जब शिक्षक को आनन्द नहीं आता तब बच्चों को भी आनन्द नहीं आता है। व्याकरण पढ़ाते समय हम यह ध्यान रखते हैं कि विद्यार्थियों पर व्याकरण सम्बन्धी कई अवधारणाएँ एक साथ न थोप दी जाएँ, बल्कि उन्हें हर अवधारणा के लिए

पर्याप्त समय मिले ताकि वह अवधारणाओं को व्यवस्थित रूप से सीख सकें। उन्हें व्याकरण के बारे में अपने विचार देने की बजाय व्यावहारिक उदाहरण खोजने में सक्षम बनाता हूँ। नाटक पढ़ाते समय, मैं अन्तर्दृष्टि (अभिनेता द्वारा चरित्र के दिल और दिमाग़ में उतरना), बलाघात और स्वर के उतार-चढ़ाव पर ज़ोर देता हूँ।

राघवेंद्र हेर्ले : बच्चों की सीखने की क्षमता को बेहतर बनाने के लिए भाषा और साहित्य के शिक्षण के माध्यम से कौन-सी विधियाँ और तकनीक अपनाई जा सकती हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : जब शिक्षण की कोई भी प्रक्रिया सरल से कठिन की ओर बढ़ने वाली होती है तब बच्चों की सीखने के प्रति दिलचस्पी बढ़ती जाती है। इस सम्बन्ध में भाषा और साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्कूल के पुस्तकालय का इस सन्दर्भ में अच्छा उपयोग किया जा सकता है। हमारे स्कूल के पुस्तकालय में 5000 से अधिक पुस्तकें हैं। लेकिन बात पुस्तकों की संख्या या व्यवस्थित पुस्तकालय होने से थोड़ा और आगे की है कि इन पुस्तकों का उपयोग कितना हो पा रहा है, और पुस्तकालयों को बच्चों के लिए सीखने के संसाधन के रूप में कितना उपयोग में लाया जा रहा है। मेरा प्रयास होता है कि पुस्तकालय की पुस्तकें बच्चों को अपनी दोस्त लगें, और वह उन्हें पढ़ने के प्रति ललक से भरे हों। मैं अपनी कक्षा में पूरक अधिगम के लिए पढ़ाई के कोने रीडिंग कॉर्नर का ध्यानपूर्वक उपयोग करता हूँ। इसके लिए विद्यार्थियों को उनकी पसन्द की पुस्तकें पढ़ने के लिए, पढ़ी गई कविता, कहानी या निबन्ध के बारे में बोलने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ, और उन्हें अपनी भावनाओं व अनुभवों को लिखने के लिए प्रेरित करता हूँ। मैं उन्हें लेखकों और उनके लेखन के बारे में विवरण और कहावतें एकत्र करने, और फिर उनसे इन संग्रहों की हाथ से बनाई गई एक फ़ाइल या पुस्तक बनाने के लिए कहता हूँ। उनमें सामग्री और जानकारी एकत्र करने के कौशल को विकसित करने के महत्त्व पर ज़ोर देता हूँ। स्कूल में, मैं बच्चों को स्वतंत्रता दिवस, बाल दिवस, शिक्षक दिवस, खेल दिवस और दूसरे सांस्कृतिक कार्यक्रम मनाने की ज़िम्मेदारी सौंपता हूँ, और यह सुनिश्चित करता हूँ कि वह इन कार्यक्रमों का प्रबन्धन सफलतापूर्वक करें। साथ ही, वार्षिक और मध्यावधि छुट्टियों के दौरान, विद्यार्थियों को डायरी लिखने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ।

राघवेंद्र हेर्ले : आप कक्षा के अन्दर और बाहर विद्यार्थियों की साहित्यिक रुचियों को विकसित करने के लिए कौन-से तरीक़े और साधन अपनाते हैं? क्या आपको लगता है कि ऐसी साहित्यिक रुचियाँ उन्हें पूर्ण रूप से सीखने और स्कूल की गतिविधियों के प्रबन्धन में मददगार होंगी?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : मैंने कक्षा के लिए डिज़ाइन की गई गतिविधियों का पहले ही उल्लेख किया है। बाहरी गतिविधियों के लिए, मैं अपने बच्चों को 'संगोली रायण्णा' नाटक के मंचन के लिए फ़्रीडम पार्क ले गया हूँ। हर साल मैं उनसे स्कूल के वार्षिक दिवस समारोह के लिए अपने निर्देशन में नाटक करवाता हूँ। 'प्रतिभा करंजी' (प्रतिभा प्रतियोगिता) की गीत प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए भी मैं उनका मार्गदर्शन करता हूँ।

मैंने बच्चों के लिए 'पुटाणी पिकनिक' (बच्चों की पिकनिक) नामक एक नाटक लिखा है, और इस साल वार्षिक स्कूल दिवस पर उनसे इसका मंचन करवा रहा हूँ। मेरा मानना है कि इस तरह के प्रयोग और गतिविधियाँ विद्यार्थियों की साहित्यिक रुचियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। मैं इस सन्दर्भ में अपने गुरु, कन्नड़ शिक्षक महालिंगैया, को याद करता हूँ जिन्होंने मेरे हाई स्कूल के दिनों में मुझे काफ़ी प्रभावित किया। मैंने अपने विद्यार्थियों को ऐसी गतिविधियों से लाभान्वित होते देखा है।

राघवेंद्र हेर्ले : जब हम सरकारी स्कूल के बच्चों की स्थिति को ध्यान में रखते हैं, ख़ासकर बहुभाषी परिवेश में, तो हम उनकी भाषा सीखने की समस्याओं और अवरोधों को कैसे हल कर सकते हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : हमारे स्कूल में, हर कक्षा में, हमें ऐसे बच्चे मिलते हैं जिनके माता-पिता बिहार, नेपाल और अन्य हिन्दीभाषी क्षेत्रों के रहने वाले हैं। इन बच्चों को भाषा सीखने में कठिनाई होती है क्योंकि उन्हें कन्नड़ भाषा सीखनी होती है। शुरुआत में, मैं इन बच्चों को उन साथियों के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ जो मूल कन्नड़भाषी हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह चाहे जिस भाषा में संवाद करना चाहें, हमें उनकी मौखिक अभिव्यक्तियों को जगह देनी चाहिए। इनमें शारीरिक भाषा और हाव-भाव का उपयोग करना भी आ जाता है। इसके बाद, जब वह कन्नड़ में बोलने का प्रयास करते हैं तो उनके उच्चारण पर ध्यान देता हूँ। उन्हें कन्नड़ भाषा सीखने में सहयोग करने के लिए बेहतर भाषाई वातावरण बनाने का प्रयास करता हूँ ताकि वह सहज और सरल ढंग से इस भाषा को अपना सकें। मुझे याद है कि एक बार नेपाल के विशाल कुमार नाम के लड़के ने मेरी कक्षा में बहुत अच्छी कन्नड़ सीखी थी। वह अभी भी मुझे फ़ोन करता है, और मुझसे कन्नड़ में बात करता है। वह इंजीनियरिंग में डिप्लोमा कर रहा है। हमारे प्रयासों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अन्य भाषाई पृष्ठभूमि से आए ऐसे विद्यार्थी भी हमें सहभागी सहयोग प्रदान करें। विविध भाषाई पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों की सहयोगात्मक भागीदारी एक बड़ी आश्वस्ति है। हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे

कन्नड़ भाषा-भाषी विद्यार्थी अलग-अलग भाषाई पृष्ठभूमि से आए अपने साथियों के साथ सम्मान और विनम्रता से पेश आएँ ताकि एक दोस्ताना माहौल बने।

राघवेंद्र हेर्ले : इन दिनों प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षकों के सामने कौन-सी चुनौतियाँ हैं? वह ऐसी चुनौतियों पर कैसे विजय पा सकते हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : प्राथमिक स्तर पर सबसे बड़ी चुनौती बहुभाषी वातावरण है। पढ़ाते समय शिक्षकों को इस तथ्य को स्वीकार करना ही होता है। साथ ही, यह सुनिश्चित करना होता है कि बहुभाषिकता उनके शिक्षण में बाधा न बने, बल्कि कक्षा में एक संसाधन के तौर पर उपयोगी हो सके। किसी भाषा पर पकड़ बनाने के लिए उसे व्यापक रूप से पढ़ना आवश्यक है। शिक्षकों का व्यक्तिगत और पेशेवर, दोनों तरह से रचनात्मक अन्वेषण में संलग्न होना ज़रूरी है। उन्हें पारम्परिक सोच से मुक्त होने और स्थापित मॉडलों से परे नवाचार करने की ओर बढ़ने की ज़्यादा ज़रूरत है। इसके अतिरिक्त, ज्ञान के संवर्धन और पुनर्निर्माण के माध्यम से पाठों की सराहना करना आवश्यक है।

राघवेंद्र हेर्ले : हमारे नीति दस्तावेज़ कहते हैं कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षण का माध्यम मातृभाषा या घर की भाषा होनी चाहिए, आप क्या सोचते हैं? बुनियादी स्तर पर विभिन्न प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों को आप कैसे देखते हैं? इनके कार्यान्वयन और जवाबदेही की व्यावहारिक क्षमता और प्रभावशीलता के बारे में आपका क्या कहना है?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : प्राथमिक स्तर पर घर की भाषा ही शिक्षण की भाषा / माध्यम होनी चाहिए क्योंकि इस भाषा से बच्चों का आत्मीय जुड़ाव होता है। हम चाहे किसी भी भाषा में बात करें, हमारी समझ मूलतः हमारी मातृभाषा से ही प्रभावित होती है। इससे परिचय हमारी शब्दावली के विकास को बढ़ावा देता है, और हमारे भाषा कौशल को बढ़ाता है। यह एक ऐसे प्राथमिक संसाधन के रूप में कार्य करता है जिसके माध्यम से हम अपने दैनिक क्रियाकलापों को संचालित करते हैं।

जहाँ तक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की बात है, यह आवश्यक है कि नए कार्यक्रम मौजूदा कार्यक्रमों की सफलता का मूल्यांकन करने के बाद ही शुरू किए जाएँ। इन कार्यक्रमों के प्रभाव और कमियों को भी ध्यान में रखकर नए कार्यक्रमों में सुधार लाया जाए। जब कई कार्यक्रम एक साथ शुरू किए जाते हैं तो इससे शिक्षकों में भ्रम की स्थिति पैदा होती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम कक्षा की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप हों तब बेहतर होता है। वह केवल सैद्धान्तिक न होकर व्यावहारिक होंगे तो उनकी प्रभावशीलता बढ़ेगी। इन कार्यक्रमों में शिक्षण सहायक सामग्री तैयार करना, और शिक्षकों के कक्षा अनुभवों को साझा करना भी अगर शामिल होता है तब शिक्षक ज़्यादा जुड़ाव महसूस कर पाते हैं। ज्ञान की उच्चतर खोज की अपेक्षा ज़मीनी स्तर की अनुक्रियाओं पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। ऐसी प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता है जिससे प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षक द्वारा सीखी गई बातों की कक्षा स्तर पर जाँच की जा सके।

राघवेंद्र हेर्ले : स्कूल का प्रबन्धन बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में किस तरह योगदान देता है? इस सम्बन्ध में आपने क्या क़दम उठाए हैं जो सामान्य से अलग हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : प्रधानाध्यापक के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, मैंने विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या, दोनों पहलुओं से शैक्षिक अनुभव को बढ़ाने के लिए कई सन्दर्भ व्यक्तियों को आमंत्रित किया। मैं यह मानता हूँ कि स्कूल का दैनिक संचालन वार्षिक शैक्षिक योजना जितना ही महत्त्वपूर्ण है, और मैंने दोनों को समान महत्त्व दिया है। प्रभावी दैनिक गतिविधियाँ वार्षिक योजना की गुणवत्ता में योगदान करती हैं। हमने स्कूल के लिए कम्प्यूटर और दूसरे बुनियादी ढाँचे की सामग्री ख़रीदने के लिए दानदाताओं की मदद भी ली है।

कन्नड़ से गणेश यू एच द्वारा अनुवादित।
अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

राघवेंद्र हेर्ले वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु में कन्नड़ अनुवाद टीम के सदस्य हैं। इसके साथ ही, आप कन्नड़ इनिशिएटिव टीम और *पाठशाला* की सम्पादकीय टीम के सदस्य भी हैं।

सम्पर्क : raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org